ISSN 2249-894X Impact Factor : 3.1402 (UIF) Volume - 5 | Issue - 3 | Dec - 2015

Review Of Research

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में हिन्दी सिनेमा का योगदान

ईश्वर सिंह सागवाल,
ऐसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी), बाबू अनन्तराम जनता महाविद्यालय, कौल (कैथल)

ईश्वर सिंह सागवाल

सार :
भाषा देश के चरित्र का दर्पण होती है । उसके सांस्कृतिक मूल्यों, विचारों और उच्चादर्शों की संवाहिका होती है । सांस्कृतिक, नैतिक, अध्यात्मिक आचार-विचार व व्यवहार की परख देश के नागरिकों की भाषा से की जा सकती है । हिन्दी 'बिजयिनी-मानवता हो जाय' का उद्घोष करने वाली उदात्त मानव चेतना की भाषा है । हिन्दी अनेकता में एकता और सरसता का स्वरोद्गार करने वाली भाषा है । भाषा व्यक्ति ही नहीं सामाजिक साझेदारी की भी संवाहिका होती है । हिन्दी भारत और हर एक भारतवासी की अस्मिता है और सांस्कृतिक परम्परा की विरासत की वाहिका भी है । आज हिन्दी भाषा न केवल भारत की राष्ट्रीय भाषा है बल्कि आज हिन्दी वैश्विक गाँव के निर्माण में फिल्मों का सहारा ले रही है ।

फिल्मों के प्रति मानव की रूचि कोई नई बात नहीं है । फिल्मों के चलचित्र का संसार बड़ा ही अनोखा होता है । कबीरदास जी ने भी कहा था कि लिखा-लिखी की बात नहीं, देखा-देखी बात । जिस प्रकार साहित्य समाज को उसका असली चेहरा दिखाने का प्रयास करती हैं । फिल्मों की भाषा सदैव सार्वभौमिक होती है । कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जो फिल्मों की ओर आकर्षित न हुआ हो । फिल्मकार सत्यजीत रे मानते है कि- एक फिल्म चित्र है, शब्द है, आन्दोलन है, नाटक-संगीत और कहानी है । यह हजारों अभिव्यक्ति पूर्ण श्रव्य और दृश्य आख्यान है ।

फिल्म, निर्माताओं के लिए एक ऐसा शक्तिशाली माध्यम है जिससे समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है व साथ ही इससे भाषा की लोकप्रियता भी बढ़ती है । आज हिन्दी की भी स्थिति कुछ ऐसी ही है । फिल्में सामाजिक बुराईयों और अपराधों को सही ढंग से पहचानने में सहायक होती है । परिणास्वरूप उनसे दूर रहने की प्रेरणा मिलती है । हिन्दी की लोकप्रियता आज विदेशों में फैली हुई है । जिसका प्रमुख कारण हिन्दी फिल्में है । तभी तो जगदीश चन्द्र माथुर ने कहा है कि-पत्रकारिता से वाक्चित्रों में विश्व के कोने-कोने से जीवन की सांगोपांग छवियों, संगीत,

ध्वनियों और बोलियों को एक दूसरे के करीब रखा । इस तरह एक दूनिया का नारा तीव्र हुआ । फिल्मी संसार बड़ा ही विचित्र अनोखा है । 7 जुलाई 1886 में ल्यूमियर ब्रदर्स ने बम्बई में छः लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया । सन् 1857 में कोकोनट फेयर नामक फिल्म को भारत में फिल्माया गया । इसी श्रृंखला में हरिश्चन्द्र सखाराम भाटडेकर ने सन् 1899 में 'दि रेस्टर्स', 'मैन एंड मंकी' जैसी फिल्में बनाई । पूरी तरह भारतीय फीचर फिल्में बनाने वाले ढुंडीराज गोविन्द फालके (दादा साहब फाल्के) ने राजा हरिश्चन्द्र फिल्म बनाई । जिसका प्रदर्शन 3 मई 1913 में हुआ । इससे पहले 'पुडलीक' फिल्म आ चुकी थी जो निर्माण की दृष्टि से आधी ब्रिटिश थी इसलिए दादा साहब फाल्के को ही भारतीय फिल्मों के जनक होने का गौरव प्राप्त है । फिल्मों के द्वारा किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक परम्परा का प्रकाशन होता है । फालके साहब इसी के प्रतीक थे ।

सन् 1931 में पहली फिल्म बम्बई के मेजिस्टिक सिनेमा में पहली ध्वनि फिल्म प्रदर्शित हुई जिसका निर्माण इंपीरियन फिल्म कम्पनी ने किया था और निर्देशक आर्देशिर ईरानी थे । 20वीं शताब्दी में ही भारत में सिनेमा युग का आरम्भ हुआ था । सन् 1913 में जब दादा साहब फाल्के ने 'हरिश्चन्द्र' फिल्म बनाकर भारत को विशेष रुप से सिनेमा को सामने खड़ा कर दिया । 1913-1930 तक भारतीय फिल्मों का मूक युग चलता रहा जिसमें लगभग 1200 फिल्में बनी । 'आलम'-आरा' बनी जिसका प्रदर्शन मुम्बई में हुआ । उसके बाद वी. शांताराम, बांबे टाकीज आदि की तरफ से कई फिल्में बनी । विमल राय, श्याम बेनेगल, मृणाल सेन जैसे लोगों से समानान्तर फिल्मों को भी काफी सम्मान मिला । समाज और संस्कृति, अद्यःपतन को प्रस्तुत करने वाले वी. शांताराम ने 'दुनिया न माने', 'आदमी', 'पड़ोसी' जैसी फिल्में दी और इन फिल्मों ने भारतीय जनमानस के उन्नपन का प्रयास किया । पी.सी. बरूआ की 'देवदास' और 'मुक्ति' देवकी बोस की 'विद्यापति और सीता', नितिन बोस की 'बड़ी बहन', फ्रैंच आस्टिन की 'अछूतकन्या', वी. दायले और फतेलाल की 'सन्त तुकाराम', महबूब की 'वतन', 'एक ही रास्ता' और 'औरत' जैसी फिल्मों ने जहां एक ओर लोगों का मनोरंजन किया वही दूसरी ओर सामाजिक कुरीतियों को मिटाने का संदेश भी दिया तथा ये फिल्में सामाजिक अंतर्विरोधों पर आधारित थी । इसलिए कहा जाता है कि फिल्में समाज का आईना भी होती है । सन् 1937 में पहली बार ईरानी जी ने रंगीन फिल्म 'किसना कन्या' बनाने का प्रयास किया, किन्तु सन् 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो जाने के कारण रंगीन फिल्मों का निर्माण कई वर्षो तक बन्द रहा ।

जब भारत में पहली बार सन् 1952 में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित हुआ तब पहली बार भारतीय सिनेमा जगत की पहचान और महत्ता विश्व में स्थापित हुई । सत्यजीत रे ने सन् 1953 में 'पाथेर पांचाली' बनाई जिसे देश-विदेश में पुरस्कृत किया गया । यह फिल्म मानवीय संवेदनाएं झकझोरनें में सफल हुई । पांचवे-छठे दशक में फिल्म जगत में कई ऐसे फिल्मकार हुए जिन्हें अंगुलियों पर नहीं गिनाया जा सकता, किन्तु इन फिल्मकारों की फिल्मों ने भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में भी धूम मचा दी और पहली बार हिन्दी गाने ऐसे लोग भी गुनगुनाने लगे जो हिन्दी भाषा नहीं जानते थे । विमलराय की 'मदर इंडिया' एक ऐसी फिल्म थी जिसने साहित्यकार प्रेमचन्द द्वारा उनके साहित्य चित्रित गांव और वहां की समस्याओं का स्मरण करा दिया । यह पहली भारतीय हिन्दी फिल्म थी जिसे विश्व स्तर पर सराहा गया और ऑस्कर पुरस्कार के लिए मनोनीत किया गया । इसी समय राजकपूर की 'आवारा', बूटपालिश', 'जागते रहो', 'श्री 420' जैसी फिल्में आई जिन्हें संगीत एवं फिल्मांकन के कारण विश्वस्तर पर सराहा गया । इन फिल्मों से हिन्दी विदेशों में खूब लोकप्रिय हुई । इसी का परिणाम था कि राजकपूर को सोवियत संघ ने सम्मानित करते हुए आमंत्रित किया । वहाँ उनके सम्मान में भीड़ का सैलाब उमड़ पड़ा और सबके ओठों पर 'मेरा जूता है जापानी' गानें की पक्तिंया थी इसी समय वी.शान्ताराम की 'दो आँखें बारह हाथ', गुरूदत्त की 'प्यासा' जैसी फिल्मों ने जहाँ इंसानियत को बढ़ावा दिया वहीं दूसरी ओर भारत के दर्शकों पर ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी दर्शकों पर जादू किया । 'सूजाता',

बैजू बावरा', 'मुगले आजम', 'संगम', 'गाइड', 'आँखें', 'गंगा-जमूना' जैसी फिल्में समसामयिक और ऐतिहासिक विषयों को लेकर बनी ।

आठवे दशक में 'हाथी मेरे साथी', उपकार, पूरब-पश्चिम, मेरा गांव मेरा देश, रोटी, कपड़ा और मकान, पाकीजा, अभिमान, शोले, दीवार, जैसी फिल्मों के द्वारा हिन्दी फिल्म उद्योग का विकास हुआ। वहीं दूसरी ओर दुनिया में अपनी महत्ता स्थापित करते हुए हॉलीवुड के बाद बॉलीवुड के नाम से जाना जाने लगा । विश्वस्तर पर हिन्दी की लोकप्रियता का पता इसी से चलता है कि अमिताभ बच्चन और शाहरूख खान जैसे कलाकारों से विश्व का कोना-कोना परिचित है । इसी प्रकार धीरे-धीरे अनेकानेक फिल्में बनाकर आज की स्थिति में भारत विश्व का सर्वाधिक फिल्म निर्माण करने वाला देश बन चुका है । आज फिल्में जन संचार माध्यम और हिन्दी के विकास का सशक्त आधार बन गई है । कई बड़े-2 देश अपना व्यापार भारत जैसे विशाल देश में स्थापित कर रहे है । आज यू.के. में हिन्दी भाषा बोलने वालो के आधार पर अपना द्वितीय स्थान बना चुकी हैं, क्योंकि सारे एशियन जिसमें श्रीलंका भी आता है सभी हिन्दी का सम्पर्क भाषा के रूप में उपयोग कर रहे है । अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बॉलीवुड की फिल्में हॉलीवुड की फिल्मों से ज्यादा मशहूर रही है और करीब-करीब दुनिया के आधे भाग में पहुँच चुकी हैं, जैसे मिडिल ईस्ट, अफ्रीका, रूस और सुदर पूर्वी देशों में आज बांग्लादेश, ब्राजील, जर्मनी, बोतस्वाना, नेपाल, फिलिपीन्स, न्यूजीलैंड, सिंगापूर, साउथ अफ्रीका, चुगांडा, यूनाइटेड किंगडम, यू.एस.ए., यमन आदि अनेक देशों के लोग हिन्दी बोल और समझ रहे है । जिसका कारण निश्चित ही हिन्दी फिल्में है ।

हिन्दी भाषा विकास की दृष्टि से फिल्मों में समाज के हर स्तर को, हर परत का जीता जागता सा साक्षात्कार हो जाता है । फिल्मों में लोगों की भाषा प्रतिफलित होती हैं फिल्में देखकर लोग अपनी भाषा को सम्पन्न बनाने की चेष्टा करते है । इस तरह भाषा को सूक्ष्म, सुदृढ़, लचीले और परिणामकारी बनाने में फिल्मों का योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है ।

संदर्भः-

1.जनसंचार, जनसम्पर्क एवं विज्ञान ज्ञानोदय प्रकाशन, कानपूर ।
2.संस्कार चेतना पत्रिका, अंक-7, 8 ।
3.जनसंचार माध्यमों में हिन्दी-डॉ. चन्द्र कुमार, कलासिक्ल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली ।
4.भारतीय सिने सिद्वान्त- डॉ. अनुपम ओझा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।
5.सिनेमा की संवेदना- डॉ. विनय अग्रवाल, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली ।
6.संचार माध्यमों का प्रभाव- ओमप्रकाश सिंह, कलासिक्ल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली ।
7.आधुनिक जन-संचार और हिन्दी- प्रो. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली ।
8.जन-माध्यम और पत्रकारिता- प्रवीण दीक्षित, सहयोगी साहित्य संस्थान, महेश्वरी मोहाल, कानपूर ।